इस्तेखारा करने वाला कभी नाकाम नहीं होता । (हदीस)

इस्तेखारा

अमल आसान, नफ़ा बे शुमार

हज़रत हाजी शकील अहमद साहब दामत बरकातुहुम

इस्तेखारा करने वाला कभी नाकाम नहीं होता । (हदीस)

इस्तेखारा

अमल आसान, नफा बे शुमार

हज़रत हाजी शकील अहमद साहब दामत बरकातुहुम

हम इस्तेखारा क्यों नहीं करते ?

हक तआला के साथ ये ख़फी (पोशीदा) बेअदबी है कि इस्तेखारा करने से घबराते हैं, और उसकी वजह ये है कि हक तआला पर इत्मीनान नहीं है कि हक तआला जो करेंगे वो खैर ही होगा। बस अपने जहन में जिस जानिब को खैर करार दे लिया उसी को खैर समझते हैं। (इस्लामी शादी, हजरत थानवी रह.)

क्या ? .... कहाँ ?

अपनी बात

नहमदुहू व नुसल्ली अ़ला रसूलिहिल करीम। अम्मा बअ्द।

अल्लाह पाक अलीम व खबीर है,हर काम के अंजाम से बाखबर है,जबके इंसान का इल्म मह्दूद है अपने कामों में नफा चाहते हुए भी कभी नफा उठाता है और कभी नुक्सान इसी नुक्सान से बचाने के लिए इस्तेखारा की अजीब नेमत दी गई है। नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया के इस्तेखारा करने वाला कभी नुक्सान नहीं उठाता (तिर्मिजी) इस किताब में मुख्तलिफ दीनी किताबों से इस्तेखारा के मज़ामीन को जमा किया गया है और सहूलत के पेशे नज़र तसहील करके हिंदी अन्नावीन भी लगा दिए गए हैं इस्तेखारा कि अहमियत, हकीकत, जरूरत, मसनून तरीक़ा और रिवाजी गलत बातों को लिख दिया गया है। अल्लाह पाक हमें रिवाजी गलत बातों से बचने और मसनून तरीके पर अमल की तौफिक अता फरमाए। छोटे-बड़े कामों में इस्तेखारा की तौफ़ीक़ दे और इस्तेखारा की बरकत से हमारे तमाम कामों का अंजाम अच्छा कर दे। आमीन

अल्लाहुम्म अहसिन आक़िबतना फिल् उमूरि कुल्लिहा व अजिर्ना मिन खिज़्इ दुनिया व अज़ाबिल आखिरह। वस्सलाम

शकील अहमद

बिस्मिल्लाहि र्रहमानि र्रहीम

इस्तेखारा की अहमियत

रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हर मुआमले में इस्तेखारा की तालीम इतनी अहमियत के साथ देते थे जैसे कुरान मजीद की तालीम देते थे। (तिर्मिजी)

इस्तेखारा करने वाला नाकाम नहीं होता

नबी ए करीम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का पाक इर्शाद हैःजो इस्तेखारा करता है वह नुक्सान नहीं उठाता और जो मशवरा करता है वह नादिम व शर्मिंदा नहीं होता (तबरानी)

इस्तेखारा छोड़ देना बदनसीबी है

नबी ए करीम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है:इन्सान की खुशनसीबी यह है कि अपने कामों में इस्तेखारा करें और बदनसीबी यह है कि इस्तेखारा को छोड़ बैठे

और

इन्सान की खुशनसीबी इसमें है के वह अपने बारे में अल्लाह के हर फैसले पर राजी रहे औऱ बदनसीबी यह है कि वह अल्लाह के फैसले पर नाराज़गी का इज़्हार करें (तिर्मिजी)

इस्तेखारा करनेवाला फरिश्तों के मानिन्द

इस्तेखारा का एक फायदा यह है कि इन्सान फरिश्ता सिफत बन जाता है। इस्तेखारा करने वाला अपनी जाती राए से निकल जाता है और वह अपनी मर्जी को खुदा की मर्जी के ताबेअ कर देता है। वह अपना रूख़ पूरी तरह अल्लाह की तरफ झुका देता है तो उसमे फरिश्तों कि सी सीफत पैदा हो जाती है, इसी तरह जो बन्दा कसरत से इस्तेखारा करता है वह आहिस्ता आहिस्ता फरिश्तों के मानिन्द हो जाता है। हजरत शाह वलीयुल्लाह साहब रह.फरमाते हैं कि फरिश्तों के मानिन्द बनने का यह एक तीर बहदफ नुस्खा है, जो चाहे आजमा कर देख लें। (हुज्जतुल्ललाहिल बालिगह)

इस्तेख़ारा से अल्लाह भी मिले और काम भी बने

हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हैय्य आरिफी साहब रह. फरमाया करते थे के जो शख्स अपने कामों से पहले अल्लाह तआला की तरफ रूजूअ हो जाए तो अल्लाह तआला जरुर उसकी मदद फरमाते हैं। तुम्हें अंदाजा नहीं कि तुमने एक लम्हे के अंदर इस एक मुख़्तसर अमल से क्या से क्या कर लिया, तुमने अल्लाह तआ़ला से रिश्ता जोड़ लिया, अल्लाह तआ़ला के साथ अपना तअ़ल्लुक काएम कर लिया, अल्लाह तआला से खैर मांग ली और अपने लिए सहीह रास्ता तलब कर लिया, इसका नतीजा यह होगा कि एक तरफ तुम्हें सहीह रास्ता मिल जाएगा और दूसरी तरफ अल्लाह तआला के साथ तअल्लुक और दुआ करने का स़वाब भी मिलेगा।

हर काम के लिए इस्तेखारा

किसी काम के करने का इरादा करें तो इस्तेखारा जरूर करें। शादी हो, कारोबार हो या सफर हो। हर छोटे-बड़े काम से पहले इस्तेखारा कर लेना चाहिए, उसमें तरद्दुद हो या ना हो, इस्तेख़ारा कर लें। हज़रत जाबिर रज़ि.फरमाते हैं कि नबी ए करीम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हमें हर काम में इस्तेख़ारा की तालीम देते थे। पहले हदीस गुजर चुकी है कि जो शख्स इस्तेख़ारा कर लेता है वह नुक्सान नहीं उठाता।

इस्तेखारा क्या है

इस्तेखारा एक मसनून अमल है जिस का तरीका और दुआ ह़ज़रत नबी ए करीम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से मन्क़ूल है। इस्तेखारा के जरिए अपने कामों में अल्लाह पाक से खैर व बरकत और अंजाम के बेहतरी तलब की जाती है।

इस्तेखारा का वक्त

इस्तेखारा के लिए कोई वक्त मुकर्रर नहीं। बाज़ लोग यह समझते हैं कि इस्तेखारा हमेशा रात को सोते वक्त ही करना चाहिए या इशा की नमाज के बाद ही करना चाहिए, ऐसा कोई जरुरी नहीं, बल्कि जब भी मौका मिले उस वक्त इस्तेखारा कर ले, ना रात की कोई कैद है और ना दिन की कोई कैद,ना सोने की कोई शर्त है और ना सोकर जागने की कोई शर्त,बल्कि जब भी नमाज का वक्त हो, दो रकअत नफ्ल नमाज पढ़कर इस्तेखारा की दुआ पढ़ ली जाए।

इस्तेखारा खालीयु ज्जहन होकर करें

इस्तेखारा का यह तरीका नहीं है कि पहले किसी काम के करने का अज़्म औऱ इरादा कर लिया, फिर बऱाए नाम इस्तेखारा भी कर लिया, इस्तेखारा तो खालीयु ज्जहन होकर करना चाहिए, वरना जो खयालात ज़हन मे पहले से मौजूद होते हैं, दिल उसी जानिब माइल हो जाता है औऱ इस्तेखारा करने वाला यह समझता है कि यह बात इस्तेखारा करने से मालूम हुई है।

इस्तेखारा का सहीह तरीका

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पाक इर्शाद हैः जब तुम में से कोई शख्स किसी भी काम का इरादा करे तो उसको चाहिए के फर्ज नमाज के अलावा दो रकअत नफ्ल पढे। (बुखारी)

सुन्नत के मुताबिक इस्तेखारा का आसान तरीका यह है कि दिन रात में कभी भी जब नमाज का मकरूह वक्त ना हो, दो रकअत नफ्ल नमाज इस्तेखारा कि निय्यत से पढ़े। निय्यत यह करे कि मेरे सामने यह मामला या मसअला है, उसमें जो रास्ता मेरे हक में बेहतर हो अल्लाह तआला उसका फैसला फरमा दे। सलाम पर कर नमाज के बाद ही इस्तेखारा की मसनून दुआ मांगे।अगर किसी को दुआ याद ना हो तो कोई बात नहीं, किताब से देख

कर यह दुआ मांग ले, अगर अऱबी में दुआ मांगने में दिक्कत हो रही हो तो उर्दू में दुआ मांग लेः

अल्लाहुम्म इन्नी अस्तखीरुक बिइल्मिक व अस्तक्दिरुक बिकुदरतिक व असअलुक मिन फज्लिकल् अज़ीम | फइन्नक तक़्दिरु वला अक़्दिरु | व तअ्लमु वला अअ्लमु व अन्त अल्लामुल ग़ुयूब |

अल्लाहुम्म इन्न कुन्त तअ्लमु अन्न हाज़ल अम्र खैरु ल्ली फ़ी दीनी व मआशी व आक़िबति अम्री व आ़जिलिही व आजिलिही फ़क़्दुरहु ली व यस्सिरहु ली सुम्म बारिक ली फ़ीहि व इन् कुन्त तअ्लमु अन्न हाज़ल अम्र शर्रु ल्ली फ़ी दीनी व मआशी व आक़िबति अम्री व आ़जिलिही व आजिलिही | फसरिफहु अन्नी वसरिफ़्नी अन्हु | वक़्दुर लियल खैर, हैसु कान सुम्मरजिनी बिही।

नोटः "हाज़ल अम्र" पर अपने काम का तसव्वुर करें

उर्दू में दुआ मांगना हो तो इस तरह मांगे

ऐ अल्लाह मैं आपके इल्म का वास्ता देकर आपसे खैर और भलाई तलब करता हूं और आपकी कुदरत का वास्ता देकर मैं अच्छाई पर कुदरत तलब करता हूं, आप गैब को जाऩने वाले हैं।

या अल्लाह आप इल्म रखते हैं, मैं इल्म नहीं रखता यानी यह मामला मेरे हक में बेहतर है या नहीं इसका इल्म आपको है मुझे नहीं, और आप कुदरत रखते हैं और मुझमें कुदरत नहीं। या अल्लाह! अगर आप के इल्म में हैं कि यह मामला (यहाँ अपने काम का तसव्वुर करें) मेरे हक में बेहतर है, मेरे दीन के लिए भी बेहतर है, मेरी मआश और दुनिया के एतेबार से भी बेहतर है और अंजामे कार के एतेबार से भी बेहतर है और मेरे फौरी नफा के एतेबार से

और देरपा फायदे के एतेबार से भी तो उसको मेरे लिए मुकद्दर फरमा दीजिए और उसको मेरे लिए आसान फरमा दीजिए और उसमें मेरे लिए बरकत पैदा फरमा दीजिए और अगर आपके इल्म मे यह बात है कि यह मामला (यहाँ अपने

काम का तसव्वुर करें) मेरे हक़ में बुरा है, मेरे दीन के हक में बुरा है या मेरी दुनिया और मआश के हक में बुरा है या मेरे अंजामे कार के ऐतेबार से बुरा है, फौरी नफा और देरपा नफे के ऐतेबार से भी बेहतर नहीं है तो इस काम को मुझसे फेर दीजिए और मुझे उस से फेर दीजिए और मेरे लिए खैर मुकद्दर फरमा दीजिए, जहाँ भी हो, यानी अगर यह मामला मेरे लिए बेहतर नहीं है तो उसको छोड़ दीजिए और उसके बदले जो काम मेरे लिए बेहतर हो उसको मुकद्दर फरमा दीजिए, फिर मुझे उस पर राजी भी कर दीजिए और उस पर मुत्मइन भी कर दीजिए। (इस्लाही खुत्बात)

शादी के लिए इस्तेखारा

हदीसे पाक में है के निकाह के पैग़ाम को किसी पर ज़ाहिर ना करे फिर खूब अच्छी तरह वुज़ू करके जितनी नफ्लें हो सके पढे, फिर खूब अल्लाह तआला की ह़म्द व सना और अज्मत व बुज़ुर्गी बयान करे और उसके बाद यह कहेः

अल्लाहुम्म इन्नक तक़्दिरु वला अक़्दिरु | व तअ्लमु वला अअ्लमु व अन्त अल्लामुल ग़ुयूब |फइन रऐत फी फुलानतिं खैरं फी दीनी व दुनयाय व आखिरती फक्दुर्हा ली| व इन कान गैरुहा खैरं ल्ली मिन्हा फी दीनी व दुनयाय व आखिरती,फक्ज़ी|

नोटः "फुलानतिं" की जगह उसका नाम लें, जिससे निकाह का इरादा हो।

तर्जमाः ऐ अल्लाह तुझे कुदरत है और मुझे कुदरत नहीं है और तू जानता है और मैं नहीं जानता और तू गैब का हाल जानता है,पस अगर तू जानता है के फुलां औरत/फुलां मर्द

(इस जगह जिससे निकाह का इरादा हो, उसका नाम लें) मेरे लिए दीन व दुनिया और आखिरत के ऐतेबार से बेहतर है तो उसे मेरे लिए मुकद्दर कर दे और अगर उसके अलावा कोई (दूसरी औरत या दूसरा मर्द) मेरे दीन और आखिरत के लिए बेहतर है तो उसी को मेरे लिए मुकद्दर फरमा।

(मुस्तदरक)

इस्तेखारा कितनी बार किया जाए

हजरत अनस रजि. फरमाते हैं कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फरमायाः ऐ अनस! जब तुम किसी काम का इरादा करो तो उसके बारे में अल्लाह तआला से सात मर्तबा इस्तेखारा करो, फिर उसके बाद देखो, तुम्हारे दिल में जो कुछ डाला जाए यानी इस्तेखारा के नतीजे मे बारगाहे हक की जानिब से जो चीज तुम्हारे दिल में डाली जाए, उसी को इख्तियार करो कि तुम्हारे लिए वही बेहतर है। (मज़ाहिरे हक़)

इस्तेखारा करने के लिए कोई मुद्दत मुतअय़्यन नहीं। एक मामले में हजरत उमर रज़ि. ने एक माह तक इस्तेखारा किया था, उसके बाद शरहे सद्र हुआ था, रिवायत में है के अगर एक माह के बाद भी शरहे सद्र ना होता तो इस्तेखारा जारी रखते। (रहमतुल्लाहिल वासिअह)

इस्तेखारा कर लेने के बाद क्या करें

खालीयु ज्जहन होकर इस्तेखारा कर लेने के बाद दिल जिस तरफ मुतवज्जेह हो जाए, यकीन कर लें कि यही मेरे लिए बेहतर है और अगर दिल की तवज्जोह हट गई या अस्बाब पैदा नहीं हुए या अस्बाब मौजूद थे मगर इस्तेखारा के बाद खत्म हो गए, काम नहीं हो सका तो इत्मिनान रखें और अल्लाह तआला पर यकीन रखें कि उसी में मेरी बेहतरी होगी।

इस नबवी तरीके पर इस्तेखारा कर लेने के बाद यकीन रखे के अल्लाह तआला मेरे नफा व नुक्सान को मुझसे ज्यादा बेहतर जानते हैं, इसलिए अब जो भी होगा वह बेहतर ही होगा, अगरचे बज़ाहिर वह अच्छा ना मालूम हो।

इत्मीनान न हो तो

इस्तेखारा के बाद भी अगर कशमकश मौजूद हो तो भी इस्तेखारा का मक्सद हासिल हो गया, इसलिए के बंदे के इस्तेखारा करने के बाद अल्लाह तआला वही करते हैं, जो उस के हक में बेहतर होता है।

नुक्सान नजर आए तो

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ी. का फरमान है कि बन्दा अल्लाह तआला से इस्तेखारा करता है तो अल्लाह तआला उसके लिए कुछ तै फऱमा देते हैं। बन्दा उस फैसले के ज़ाहिर को देखकर अल्लाह तआला से शिकवा करता है (यह काम बेहतर नहीं हुआ) हालांकि अन्जाम और नतीजे के ऐतेबार से उसके हक में वही काम बेहतर होता है।

इस्तेखारा के बाद जो होगा ख़ैर होगा

अल्लाह तआला से बढ़कर कौन रहीम व करीम है ? उसका करम बेनजीर है, इल्म कामिल है, अब जो सूरत इंसान के हक़ में मुफीद होगी, हक तआला उसकी तौफीक देगा, उस की रहनुमाई फरमाएगा, फिर ना सोचने की जरूरत, ना ख्वाब में नजर आने की हाजत। जो उसके हक में ख़ैर होगा वही होगा। चाहे उसके इल्म में उस की भलाई आए या ना आए। इत्मीनान व सुकून फिलहाल हासिल हो या ना हो, होगा वही जो ख़ैर होगा।

(दौरे हाजिर के फितने और उनका इलाज)

फौरी जरूरत के लिए इस्तिखारा

बाज मर्तबा ऐसा होता है कि किसी काम में फौरी फैसला करना पड़ता है और इतनी मोहलत नहीं होती के दो रकअत पढ़कर इस्तेखारा की दुआ पढ़ी जाए तो ऐसे मौके के लिए खुद नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने कुछ दुआएं तल्कीन फरमाई हैं।

"अल्लाहुम्म खिरली वख्तरली" (कंज़ुल उम्माल)

ऐ अल्लाह! मेरे लिए मेरे लिए खैर का फैसला फरमाइए और मेरे लिए बेहतरीन इन्तेखाब फरमाइए।

"अल्लाहुम्म हदिनी व सद्दिदनी" (सहीह मुस्लिम)

ऐ अल्लाह! मेरी रहनुमाई फरमाइए और मुझे सीधे रास्ते पर रखिए।

"अल्लाहुम्म अल्हिम्नी रुश्दी व अइज़्नी मिन शर्रि नफ्सी"

ऐ अल्लाह! जो मेरे लिए मुफीद है वो मेरे दिल में डाल दीजिए और मुझे मेरे नफ़्स के शर से बचा लीजिए।

इनमें से जो दुआ याद आ जाए पढ ले या अपनी ज़ुबान ही मे अल्लाह पाक से कह ले के ऐ अल्लाह! मुझे यह बात पेश

आई है, इस सिलसिले में आप मुझे सहीह रास्ता दिखा दीजिए, अगर जुबान से ना कह सके तो दिल ही दिल में अल्लाह तआला से कह दे के या अल्लाह! इस मामले में मेरी सहीह रहनुमाई फरमा दीजिए। इन् शाअल्लाह तआला वही होगा जो दीन व दुनिया के ऐतेबार से आपके हक़ में बेहतर होगा।

इस्तेखारा और बे तहक़ीक़ बातें

इस्तेखारा में इस बात की कोई हकीकत नहीं है कि इस्तेखारा की नमाज और दुआ पढ़ने के बाद

सो जाओ।

किसी से बात ना करो।

दाए करवट लेटो।

किबला रू लेटो।

अच्छे या बुरे ख्व़ाब का इंतेजार करो।

काला-पीला कोई रंग या रौशनी या तारीकी नजर आएगी।

ख्व़ाब में कोई बुजुर्ग आकर सब कुछ बता देंगे।

इनमे से कोई चीज भी हदीस से साबित नहीं, बस यह बातें बगैर तहक़ीक़ के चल पड़ी हैं।(खुतबातु र्रशीद)

दूसरों से इस्तेखारा कराना

यह जो दूसरों से इस्तेखारा कराया करते हैं उसकी कोई हकीकत नहीं... हाँ दूसरों से करा लेना गुनाह तो नहीं, लेकिन इस्तेखारा की दुआ के अल्फाज ही ऐसे हैं कि खुद करना चाहिए। (मजालिसे मुफ्ती ए आजम)

जिस तरह जाहिलिय्यत में तीरों पर लिखकर यह मालूम किया जाता था, उसी तरह आज-कल तरह तरह से इस्तेखारे किए जा रहे हैं। यह तरीका बिल्कुल गलत है और इन्तेहा तो यह हो गई के अब टीव्ही और रेडियो पर इस्तेखारे निकलवाए जा रहे हैं, हालांकि इस्तेखारा अल्लाह तआला से अपने मामले में खैर और भलाई तलब करना है, ना कि खबर का मालूम करना।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ से हिदायत यह है कि जिसका काम हो वह खुद इस्तेखारा करे, दूसरों से करवाने का कोई सुबूत नहीं। जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया में मौजूद थे उस वक्त सहाबा से ज्यादा दीन पर अमल करने वाला कोई नहीं था और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बेहतर इस्तेखारा करने वाला भी कोई ना था, लेकिन यह कहीं नहीं लिखा कि किसी ने भी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जाकर यह कहा हो कि आप मेरे लिए इस्तेखारा कर दीजिए। सुन्नत तरीका यही है कि साहिबे मामला खुद इस्तेखारा करे, इसी में बरकत है।

किसी बुज़ुर्ग या आलिम से इस्तेखारा कराना

कुछ लोग कहते हैं कि इस्तेखारा खुद करने कि बजाए किसी बुज़ुर्ग से,आलिम से या किसी नेक आदमी से करवाना चाहिए, हमारे इस्तेखारा का क्या ऐतेबार ?

लोगों का यह खयाल गलत है। सही बात ये है कि जिस का काम हो वो ख़ुद इस्तेखारा करे। इस्तेखारा दूसरे से करवाना नाजाएज तो नहीं है, लेकिन बेहतर और मस्नून भी नहीं है। इस्तेखारा का सहीह तरीका वही है जो नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सिखाया है कि मामला जिसका हो वही इस्तेखारा करे।

हम गुनाहगार हैं! इस्तेखारा कैसे करें ?

कुछ लोग यह कहते हैं कि हम तो गुनाहगार हैं, हम इस्तेखारा कैसे करें। उनको यह बात समझ लेना चाहिए कि इस्तेखारा के लिए शरीअत ने तो कोई ऐसी शर्त नहीं लगाई है कि इस्तेखारा गुनाहगार इन्सान ना करें, जो शर्त शरीअत में नहीं लगाई, आप अपनी तरफ से कुछ शर्त को क्यों बढ़ाते हैं ? अल्लाह पाक नेक लोगों की भी सुनता है और गुनाहगारों की भी। जब कोई शख्स इस्तेखारा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु सल्लम की इत्तेबाअ और सुन्नत के तौर पर करेगा तो अल्लाह तआला उस की दुआ जरुर सुनेंगे। हाँ! गुनाहों से बचना चाहिए ताकि दुआ जल्दी कबूल हो।

इस्तेखारा कोई फाल निकलवाना नहीं

कुछ लोग इस्तेखारा के जरिए फाल निकलवाते हैं और कुछ ऐसा समझते हैं कि इस्तेखारा के जरिए गुजिश्ता जमाने में पेश आने वाला या आइंदा होने वाला वाकिआ मालूम हो जाता है। इस्तेखारा का मक्सद यह नहीं है, इस्तेखारा तो अपने कामों में अल्लाह तआला की तरफ से खैर व बरकत तलब करने और अन्जाम की बेहतरी के लिए एक मसनून अमल है।

किन कामों में इस्तेखारा नहीं

एक बात यह भी समझ लेनी चाहिए कि जो चीजें अल्लाह ने फर्ज कर दी हैं या वाजिबात और सुनने मुअक्कदा हैं, उनमें इस्तेखारा की हाजत नहीं।

इसी तरह जिन कामों को अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने हराम और नाजाएज कर दिया है, उनमें भी इस्तेखारा नहीं है, मसलन कोई आदमी इस्तेखारा करें कि नमाज पढ़ूं या ना पढ़ूं ? रोजा रखूं या ना रखूं ? तो यहाँ इस्तेखारा नहीं। यह काम तो अल्लाह तआला ने फर्ज कर दिया है, या कोई शख्स इस बारे में इस्तेखारा करें कि शराब पीयूं या ना पीयूं ? रिशवत लूं के ना लूं ? वीडियो फिल्मों का कारोबार करूं या ना करूं ? सूदी मामला करूं या ना करूं ? तो ऐसे नाजाएज कामों में भी इस्तेखारा नहीं किया जाएगा, बल्कि यह सब तो हराम हैं,इस्तेखारा सिर्फ जाएज कामों के लिए हैं।

रिज़्के हलाल के हासिल करने और रोजी कमाए या न कमाए इसके लिए इस्तेखारा की जरुरत नहीं, क्योंकि यह तो फ़रीज़ा है। इस्तेखारा इसलिए किया जाए कि हलाल रिज्क हासिल करने के लिए मुलाज़मत करूं या तिजारत ? मसलन तिजारत कपड़ों की करूं या किसी और चीज की ? अब यहाँ इस्तेखारा की जरूरत है। इसी तरह अगर फर्ज़ हज की अदाएगी के लिए जाना हो तो यह इस्तेखारा ना करें कि मैं जाऊं या ना जाऊं ? बल्कि यह इस्तेखारा करें कि फुलाँ दिन जाऊं या ना जाऊं ? फुलाँ टूर से जाऊं या न जाऊं ?

मआखिज़ व मराजिअ

सहीह बुखारी मुहम्मद इब्ने इस्माइल रह.

सहीह मुस्लिम मुस्लिम बिन हज्जाज रह.

जामेअ तिर्मिज़ी मुहम्मद बिन ईसा रह.

मुस्तदरक अल स्सहीहैन अबू अब्दुल्लाह हाकिम नीसापूरी

कंज़ुल उम्माल से शैख़ अली मुत्तक़ी रह.

रहमतुल्लाहिल वासिअह मुफ्ती सईद अहमद पालनपुरी मद्द ज़िल्लुहुल आल़ी

मजालिसे मुफ्ती ए आजम मुफ्ती मुहम्मद शफ़ी साहब रह.

दौरे हाजिर के फितने और उनका इलाज मुफ्ती मुहम्मद यूसुफ लुधियान्वी रह.

खुतबातु र्रशीद मुफ्ती रशीद अहमद लुधियान्वी

इस्लाही खुतबात मुफ्ती मुहम्मद तकी उस्मानी मद्द ज़िल्लुहुल आल़ी

इस्तेखारा सुन्नत के मुताबिक कीजिए मौलाना उमर अन्वर मद्द ज़िल्लुहुल आल़ी

इस्तेखारा के सिलसिले में एक अहम वाकिआ

हजरत जैनब रजी. को हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने निकाह का पैगाम दिया तो उन्होंने इस काम में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रजामंदी होने के बावजूद जिसके कारे खैर होने मे कोई शुबह हो ही नहीं सकता, अर्ज किया: "ला हत्ता अस्तशीर रब्बी" यानी अभी मैं निकाह के बारे में कुछ नहीं कहती जब तक मैं अपने रब से मशवरा न कर लूं (इस्तेखारा ना कर लूँ)

हजरत ज़ैनब रजी. के लिए इस रिश्ते से अच्छा रिश्ता दुनिया में कोई ना था, अल्लाह तआला हजरत ज़ैनब रज़ी. के दरजात बहुत बलंद फरमाएं कि उन्होंने इस अमल से इस्तेखारा की अहमियत को वाजेह कर दिया कि जहाँ सरासर खैर नजर आए, वहाँ भी इस्तेखारा करो, उनको खौफ था कि कहीं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुकूक अदा ना हो सके, खिदमत व इताअत में कमी हो तो यह निकाह वबाल का बाइस हो।

इस किताब में

* इस्तेखारा की अहमियत व फजीलत
* अहादीस में इस्तेखारा की ताकीद
* इस्तेखारा का सहीह तरीका
* फौरी जरूरत के लिए मुख्तसर इस्तेखारा
* निकाह के लिए मसनून इस्तेखारा
* इस्तेखारा कौन करे
* दूसरों से इस्तेखारा करवाना कैसा है
* इस्तेखारा किन कामों के लिए है
* किन कामों में इस्तेखारा नहीं
* इस्तेखारा और बेतहक़ीक़ बातें

और भी बहुत कुछ ....

Shop No. 1/2, Plot No. 18, Bushra Park
Old Panvel. 410 206. Ph. 98929 15021
e-mail : hirapublication@gmail.com / website : www.shariat.info